23

तनादि से चुरादि तक - तन् कृ क्री चुर् धातुएं

पूर्व पाठ से पूर्व में आप स्वादिगण, तुदादिगण और रुधादिगण का परिचय प्राप्त कर चुके हैं। अब तनादिगण, क्रयादिगण आरै चुरादिगण इन तीन अन्तिम गणों को जानेंगे। पूर्व में भी प्रतिगण में विकरण का भेद है और विकरण भेद से रुपभेद होता है। जैसे तनादिगणीय धातुओं से उ विकरण प्रत्यय, क्रयादिगणीय धातुओं से श्ना विकरण प्रत्यय होता है। विकरण भेद से रुप भेद जैसे तन् धातु से उ प्रत्यय में तनोति रुप, क्री धातु से श्ना प्रत्यय में क्रीणाति रुप होता है। चुरादिगण सबसे विलक्षण है। अन्य गणों में आप देखा है कि जो धातु व प्रत्यय के मध्य में शप् आदि विकरण होते हैं। चुरादिगण में मूल धातु का कोई विकरण नहीं होता है। धातु से स्वार्थ में णिच् प्रत्यय में सनाद्यन्ता धातवः से धातु संज्ञा होकर शप् आदि प्रत्यय होता है। इस पाठ में सभी रुपों को ससूत्र प्रदर्शित नहीं करेंगे अन्यथा पाठ विस्तार होगा। पूर्वतन पाठवत् इस पाठ में भी प्रतिगण प्रथम धातु ही आलोच्य होगी। धातु अन्तर की प्रक्रिया स्वयं समझेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- प्रतिगण कौन सा विकरण होगा यह जान पाने में;
- विकरण विधायक सूत्र का अर्थ जान पाने में;
- विशेष सूत्रों की व्याख्या जान पाने में;
- क्री धातु के रुप सिद्ध कर पाने में;
- तन् चुर् एवं कृ धातु के रुप सिद्ध कर पाने में;
- चुर् धातु के रुप सिद्ध कर उसकी विशेषताओं को जान पाने में;

टिप्पणियाँ

- इनको जानकर अन्य धातु रुप सिद्ध कर पाने में;
- वहाँ प्रदर्शित वैकल्पिक रुप भी समझ पाने में;

तनादिगणः

तनु विस्तारे स्वरितेत् होने से उभयपदी, सेट् तनादिगणीय धातु से वर्तमान क्रियावृत्तित्व की विवक्षा में कर्ता अर्थ में लट् परस्मैपद में तिप् प्रत्यय होकर तन्+ति स्थिति में शप् प्राप्ति में यह सूत्र आरम्भ होता है।

23.1 तनादिकृञ्भ्यउः॥ (3.1.79)

सूत्रार्थ - कर्तृवाच्य सार्वधातुक परे होने पर तनादिगण की धातु से परे उ प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या - इस विधिसूत्र में तनादिकृभ्यः (5/3), उः (1/1) ये दो पद है। कर्तरिशप् को कर्तरि (7/1), सार्वधातुके युक् से सार्वधातुके (7/1) पदों की अनुवृत्ति होती है। प्रत्ययः (1/1) परश्च (1/1) का अधिकार है। धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिव्याहारे यङ् सूत्र से धातोः पद अनुवृत्त होता है। दश धातुगणों में स्वादिगण आठवां गण है। तन् आदिः येषाम् (धातुनाम्) ते तनादयः (धातवः) इति तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहिसमासः तेभ्यः तनादिभ्यः। तनादयश्च क्रञ् च तेषाम् इतरेतरयोगद्वन्द्वः, तेभ्यः तनादिकृभ्यः। सूत्रार्थ होता है– कर्ता अर्थ में सार्वधातुक संज्ञक प्रत्यय परे तनादिगणीय धातुओं एवं कृधातु से परे उ प्रत्यय होता है। शित् अभाव होने से आर्धधातुक संज्ञा होती है। यह कर्तरिशप् का अपवाद है।

उदाहरण - पूर्वोक्त प्रकार से तन्+ति स्थिति में प्राप्त शप् का बाध करके प्रकृत सूत्र से उ प्रत्यय होता है क्योंकि यहां तिप् सार्वधातुक प्रत्यय परे है। तन्+उ+ति स्थिति में आर्धधातुकं शेषः से उ की सार्वधातुकसंज्ञा में सार्वधातुकार्धधातुकयोः से उकार को गुण ओकार होकर **तनोति** रुप सिद्ध होता है। इसी प्रकार सिप् मिप् होता है।

द्विवचन में तस् अपित् सार्वधातुक होने से ङित्वत्भाव होकर उ को गुण नहीं होता है। अतः सकार को रुत्व विसर्ग होकर **तनुतः** रुप सिद्ध होता है। बहुवचन में झि प्रत्यय को अन्तादेश में तन् उ अन्ति, स्थिति में नु के उकार को इकोयणचि से यण् वकार होकर **तन्वन्ति** रुप सिद्ध होता है।

विशेष- तन् धातु स्वरितेत् होने स्वरितञितः कर्तृऽभिप्राये क्रियाफले से क्रियाफल का कर्तृगामी होने पर तन् धातु से विहित लकार के स्थान पर आत्मनेपद प्रयय होते हैं। क्रियाफल का परगामी होने से शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् से परस्मैपद प्रत्यय होते हैं।

वस्, मस्, वहि, महि में लोपश्चास्यन्यतरयाम् म्वोः से उकार का विकल्प से लोप होता है। उससे तन्वः/तनुवः, तन्मः/तनुमः, तन्वहे/तनुवहे, तन्महे/तनुमहे रूप सिद्ध होते हैं। सिप् में उतृच प्रत्ययसंयोगपूर्वात् से हि का लोप होता है। आत्मनेपद स्थलों में तादि सभी अपित् होने से सर्वत्र गुण नहीं होता।

इस प्रकार **लट् परस्मैपद में रूप**- तनोति, तनुतः, तन्वन्ति। तनोषि, तनुथः, तनुथ। तनोमि, तन्व/तनुवः, तन्मः/तनुमः। **लट् आत्मनेपद में रूप**- तनुते, तन्वाते, तन्वन्ते। तनुषे, तन्वाथे, तनुध्वे। तन्वे, तन्वहे/तनुवहे, तन्महे/तनुमहे।

लिट् में तिप् को णल् द्वित्वकार्य, हलादिशेषे ततन् अ स्थिति में अत उपधायाः से उपधा वृद्धि होकर ततान रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार मिप् में होता है। तस्, झि, थस्, थ, वस्, मस् में असंयोगल्लिट् कित् से कित् होने से अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि से अभ्याससंज्ञक प्रथम तकार का लोप तथा अकार को एकार होता है। किन्तु थल् में नहीं होता। आत्मनेपद स्थलों में सर्वत्र ऐसा ही होता है। सिप्, वस्, मस्, परस्मैपद, एवं थास्, ध्वम् वहि महि आत्मनेपद में इट् आगम होता है। आत्मनेपद त, झ थास् को छोडकर अन्यत्र टि को ए होता है। इस प्रकार **लिट् परस्मैपद में**- ततान, तेनतुः, तेनुः। तेनिथः, तेनथुः, तेन। ततान/ततन, तेनिव, तेनिम।

आत्मनेपद में रूप- तेने, तेनाते, तनिरे। तेनिषे, तेनाथे, तेनिध्वे। तेने, तेनिवहे, तेनिमहे।

लुट् तिप् में उ का अपवाद होकर स्यतासीलृलुटोः सूत्र से धातु से परे तासी प्रत्यय आर्धधातुक होने से आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट्, परस्मैपद में लुटः प्रथमस्य डारौरसः सूत्र से तिप्,तस्,झि को डा, रौ, रस् आदेश, आत्मनेपद के त, आताम्, झ को भी होता है। डादेश डित् से टि का लोप। प्रथमपुरूष में उभय विध स्थल समान रूप होते है। थास् को छोडकर आथाम् आदि में टित आत्मनेपदानाम् टेरे सूत्र से टि को एत्व होता है।

इस प्रकार **लुट् परस्मैपद में**- तनिता, तनितारौ, तनितारः। तनितासि, तनितास्थः, तनितास्थ। तनितास्मि, तनितास्वः, तनितास्मः।

इस प्रकार **लुट् आत्मनेपद में रूप**- तनिता, तनितारौ, तनितारः। तनितासे, तनितासाथे, तनिताध्वे। तनिताहे, तनितास्वहे, तनितास्महे।

लृट् में प्राप्त उ का अपवाद होकर स्यतासीलृलुटोः सूत्र से धातु से परे स्य प्रत्यय की आर्धधातुक संज्ञा, आर्धधातुकस्येड्वलादेः से इट् प्राप्त, आदेश प्रत्यययोः से षत्व होकर तनिष्यति। त प्रत्यय में तनिष्यते रूप सिद्ध होता है। लृट् आत्मनेपद में थास् को छोड़कर आथाम् आदि में टित आत्मनेपदानाम् टेरे सूत्र से टि को एत्व होता है। आत्मनेपद में एध् धातु के समान है। इस प्रकार लृट् परस्मैपद में- तनिष्यति, तनिष्यतः, तनिष्यन्ति। तनिष्यसि, तनिष्यथः, तनिष्यथ। तनिष्यामि, तनिष्यावः, तनिष्यामः।

लृट् आत्मनेपद में रूप- तनिष्यते, तनिष्येत, तनिष्यन्ते। तनिष्यसे, तनिष्येथे, तनिष्यध्वे। तनिष्ये, तनिष्यावहे, तनिष्यामहे।

लोट् परस्मैपद तिप् में उप्रत्यय, तिप् सार्वधातुकसंज्ञक होने से सार्वधातुकार्धधातुकयोः से उकार को गुण ओकार, तिप् के इ को उ होकर तनोतु रुप सिद्ध होता है। तातङ् से तनुतात्। आगे स्वयं सिद्ध करें। इस प्रकार **लोट् परस्मैपद में रूप**- तनोतु/तनुतात्, तनुताम्, तन्वन्तु। तनु/तनुतात्, तनुतम्, तनुत। तनवानि, तनवाव, तनवाम।

टिप्पणियाँ

आत्मनेपद में रूपों की सिद्ध के लिए सु धातु देखें - तनुताम्, तन्वाताम्, तन्वताम्। तनुष्व, तन्वाथाताम्, तनध्वम्। तनवै, तनवावहै, तनवामहै।

लङ् में परस्मैपद व आत्मनेपद स्थलों में रूपों की सिद्ध के लिए सु धातु देखें। इस प्रकार **लङ् परस्मैपद में रूप**- अतनोत्, अतनुताम्, अतन्वन्। अतनोः, अतनुतम्, अतनुत। अतनवम्, अतन्व /अतनुव, अतन्म/अतनुम।

लङ् आत्मनेपद में रूप- अतनुत, अतन्वाताम्, अतन्वत। अतनुथाः, अतन्वाथाम्, अतनुध्वम्। अतन्वि, अतन्वहि/अतनुवहि, अतन्महि/अतनुमहि।

विधिलिङ् में परस्मैपद व आत्मनेपद स्थलों में रूपों की सिद्ध के लिए सु धातु देखें। इस प्रकार **विधिलिङ् परस्मैपद में रूप**- तनुयात्, तनुयाताम्, तनुयुः। तनुयाः, तनुयातम्, तनुयात। तनुयाम्, तनुयाव, तनुयाम।

आत्मनेपद में रूप- तन्वीत, तन्वीयाताम्, तन्वीरन्। तन्वीथाः, तन्वीयाथाम्, तन्वीध्वम्। तन्वीय, तन्वीवहि, तन्वीमहि।

आशीर्लिङ् में तिप् की लिङाशिषि से आर्धधातुकसंज्ञा होने से उ प्रत्यय नहीं होता। उसके बाद यासुट् सुट्तिथोः से सुट् आगम, तिप् के इकार का लोप, स्कोःसंयोगाद्यारन्ते च से दोनों सकारों का लोप होकर तन्ययत् रूप सिद्ध होता है। आगे स्वयं सिद्ध करें। **आशीर्लिङ् परस्मैपद में रूप** - तन्यात, तन्यास्ताम्, तन्यासुः। तन्याः, तन्यास्तम्, तन्यास्त। तन्यासम्, तन्यास्व, तन्यास्म।

आत्मनेपद स्थल में एध् धातुवत् रूप होते हैं। केवल प्रथमपुरूषैकवचन में रूप प्रदशित कर रहे है। तन् धातु से त प्रत्यय, लिङः सीयुट् से सीयुट् सुट्, लिङाशिषि से समुदाय की आर्धधातुकसंज्ञा आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट्, लोपो व्योर्वलि से यकार लोप, उभयस्थल में सर्वत्र आदेश प्रत्ययय़ोः से षत्व होता है। तथा ष्टुत्व होकर तनिषीष्ट रुप सिद्ध होता है। **आत्मनेपद में रूप**- तनिषीष्ट, तनिषीयास्ताम्, तनिषीरन्। तनिषीष्ठाः, तनिषीयास्थाम्, तनिषीढ्वम्। तनिषीय, तनिषीवहि, तनिषीमहि।

लुङ् प्रथमपुरूषैकवचन में अट् तिप् उ के अपवाद में च्लि को सिच्, इकार लोप, अस्तिसिचोऽपृक्ते से ईट् आगम, आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट्, वदव्रजहलन्तस्याचः से वृद्धि प्राप्त किन्तु नेटि से निषेध हलोदेर्लघाः से विकल्प में तन् के अकार को वृद्धि आकार, इट ईटि से सकार लोप, एवं सवर्णदीर्घ होकर अतानीत् रुप सिद्ध होता है। वृद्धि अभाव में अतनीत् रुप सिद्ध होता है। **वृद्धि पक्ष में रूप** - अतानीत्, अतानिष्टाम्, अतानिषुः। अतानीः, अतानिष्टम्, अतानिष्ट। अतानिषम्, अतानिष्व, अतानिष्म।

वृद्धि अभाव पक्ष में रूप - अतनीत्, अतनिष्टाम्, अतनिषुः। अतनीः, अतनिष्टम्, अतनिष्ट। अतनिषम्, अतनिष्व, अतनिष्म।

तन् लुङ् में अट्, आत्मनेपदसंज्ञक तप्रत्यय, उ के अपवाद में च्लि को सिच्, सिच् के सकार को विकल्प में -

23.2 तनादिभ्यस्तथासोः॥ (2.4.79)

सूत्रार्थ - तनादिगण की धातुओं से परे सिच् का विकल्प से लुक् हो, त अथवा थास् परे हो तो।

सूत्रव्याख्या - इस विधि सूत्र में तनादिभ्यः (5/3), तथासोः (7/2) ये दो पद है। तन् आदि येषां ते तनादयः इति बहुव्रीहिसमासः। तृच थाश्च तयोः इतरेतरयोगद्वन्द्वे तथासौ, तयोः तथासोः। गतिस्थाघूपाभूभ्यः सिच् परस्मैपदेषु से सिचः (6/1), ण्यक्षत्रियार्षञितो यूनि लुगणिञोः से लुक् (1/1) की, विभाषा घ्राधेट्शाच्छासः से विभाषा अनुवृति है। सूत्रार्थ होता है - तनादिगण की धातुओं से परे सिच् का विकल्प से लुक् हो, त अथवा थास् परे हो तो।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय - पूर्वोक्त प्रकार से अ तन् स त स्थिति में प्रकृत सूत्र से सिच् के सकार का लुक् होता है। क्योंकि यहां त परे है। उसके बाद अतन् त में अग्रिम सूत्र -

23.3 अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति॥ (6.4.37)

सूत्रार्थ - वनु धातु का तथा अनुनासिकान्त अनुदात्तोपदेश धातुओं का और अनुनासिकान्त तनोत्यादि धातुओं का लोप हो झलादि कित् ङित् परे हो तो।

सूत्रव्याख्या - इस विधि सूत्र में अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनाम् (6/3), अनुनासिक (6/3), लोपः (1/1), झलि (7/1), क्ङिति (7/1) ये पांच पद है। अनुनासिक लुप्तविभक्ति निर्देश है। अनुदात्त उपदेशे येषां ते अनुदात्तोपदेशाः इति बहुव्रीहिसमासः। तनोतिः आदिः येषां ते तनोत्यादयः। अनुदात्तोपदेशाश्च वनतिश्च तनोत्यादयश्च तेषां अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनाम्। क् च ङ् च क्ङौ तौ इतौ यस्य स क्ङित् तस्मिन् द्वन्द्वगर्भबहुव्रीहिसमासः। झलि पद क्ङिति का विशेषण है। सूत्रार्थ होता है - वन् धातु का तथा अनुनासिकान्त अनुदात्तोपदेश धातुओं का और अनुनासिकान्त तनोत्यादि धातुओं का लोप हो झलादि कित् ङित् परे हो तो।

उदाहरण- यमि रमि नमि गमि हनि मन्यतयोऽनुदात्तोपदेशाः। तनु क्षणु क्षिणु ऋणु तृणु घृणु वनु तनु तनोत्यादयः। इन सभी धातुओं के रूप यहां प्रस्तुत हैं-

1. यम् (रोकना) - यतः (क्त), यतवान् (क्तवतु), यत्वा (क्त्वा)।
2. रम् (खेलना) - रतः (क्त), रतवान् (क्तवतु), रत्वा (क्त्वा)।
3. नम् (झुकना) - नतः (क्त), नतवान् (क्तवतु), नत्वा (क्त्वा)।
4. गम् (जाना) - गतः (क्त), गतवान् (क्तवतु), गत्वा (क्त्वा)।
5. हन् (मारना) - हतः (क्त), हतवान् (क्तवतु), हत्वा (क्त्वा)।
6. मन्य (मानना, जानना) - गतः (क्त), गनवान् (क्तवतु), गत्वा (क्त्वा)।

टिप्पणियाँ

7. वन् (शब्दकरना, सेवाकरना, हिंसाकरना) - वतिः (क्तिन्)।

8. तन् (विस्तार करना) - ततः (क्त), ततवान् (क्तवतु), तत्वा (क्त्वा), अतत, अतथाः।

9. क्षणु (हिंसाकरना) - क्षतः (क्त), क्षतवान् (क्तवतु), क्षत्वा (क्त्वा)। अक्षत, अक्षथाः।

1०. क्षिणु (हिंसाकरना)- क्षितः(क्त), क्षितवान् (क्तवतु), क्षित्वा (क्त्वा)। अक्षित, अक्षिथाः।

11. ऋणु (जाना) - ऋतः (क्त), ऋतवान् (क्तवतु), ऋत्वा (क्त्वा)। आर्त, आर्थाः।

12. तश्णु (खाना) - तृतः (क्त), तृतवान् (क्तवतु), तृत्वा (क्त्वा)। अतृत, अतृथाः।

13. घृणु (चमकना) - घृतः (क्त), घृतवान् (क्तवतु), घृत्वा (क्त्वा)। अघृत, अघृथाः।

14. वनु (मागना) - वतः (क्त), वतवान् (क्तवतु), वत्वा (क्त्वा)। अवत, अवथाः।

15. मन् (जानना) - मतः (क्त), मतवान् (क्तवतु), मत्वा (क्त्वा)। अमत, अमथाः।

पूर्वोक्त प्रकार से अ तन् त स्थिति में सार्वधातुकमपित् से त प्रत्यय का ङित्वत्भाव है और झलादि भी है, क्योंकि तन् के नकार से परे जो त प्रत्यय है वह झलादि ङित् है, वर्णमेल होकर अतत रूप बनता है। सिच् के लुगभावपक्ष में इडागम होकर अ तन् इ स् त स्थिति में षत्व, ष्टुत्व होकर अतनिष्ट रुप सिद्ध होता है। इस प्रकार प्रथमपुरूषैकवचन में दो रूप बनके हैं। ध्वम् में सकार लोप, धकार को ढकार होता है। अन्य रूप स्वयं समझें। इस प्रकार **आत्मनेपद में रूप** - अतत/अतनिष्ट, अतनिषाताम्, अतनिषत।, अतथाः/ अतनिष्ठाः, अतनिषाथाम्, अतनिष्ढ्वम्,। अतनिषि, अतनिष्वहि, अतनिष्महि।

लृङ् में अट्, तिप्, इकार लोप, उ के स्थान पर स्य, षत्व, ष्टुत्व होकर असोष्यत् रुप सिद्ध होता है। लृङ् में उभयस्थल में सर्वत्र आदेश प्रत्यययोः से षत्व होता है। उत्तमपुरूषैकवचन में अमिपूर्वः से पूर्वरूप। वस् मस् में नित्यं ङितः से सकार लोप। **लृङ् परस्मैपद में रूप** - अतनिष्यत्, अतनिष्यताम्, अतनिष्यन्। अतनिष्यः, अतनिष्यतम्, अतनिष्यत। अतनिष्यम्, अतनिष्याव, अतनिष्याम।

लृङः आत्मनेपद में पूर्ववत् प्रक्रीया में रूप - अतनिष्यत, अतनिष्येताम्, अतनिष्यन्त। अतनिष्यथाः, अतनिष्येथाम्, अतनिष्यध्वम्। अतनिष्ये, अतनिष्यावहि, अतनिष्यामहि।

कृ धातुः

अब कृ धातु की समालोचना की जाएगी -

कृ (डुकृञ् विस्तारे) धातु उभयपदी, अनिट्, सकर्मक, तनादिगणीय धातु से वर्तमान क्रियावृत्तित्व की विवक्षा में कर्ता अर्थ में लट् परस्मैपद में तिप् प्रत्यय, होकर कृ+ति स्थिति में शप् प्राप्त शप् का बाध करके तनादिकृभ्यः उः से उ प्रत्यय होता है। कृ+उ+ति स्थिति में उ की आर्धधातुकसंज्ञा में सार्वधातुकार्धधातुकयोः से ऋकार को गुण, उरण्परः से अर् होता है। कर्+उ+ति स्थिति में

यहां तिप् सार्वधातुक प्रत्यय परे है। सार्वधातुकार्धधातुकयोः से उकार को गुण ओकार होकर करोति बनता है। इसी प्रकार सिप् मिप् होता है।

द्विवचन में तस् प्रत्यय, होकर कृ+तस् स्थिति में शप् प्राप्त शप् का बाध करके तनादिकृभ्यः उः से उ प्रत्यय होता है। ऋकार को गुण, उरण्परः से अर् होकर कर् उ तस् स्थिति में अपित् सार्वधातुक होने से ङित्वत्भाव होकर उ को गुण नहीं होता है। आगे-

23.4 अत उत्सार्वधातुके॥ (6.4.110)

सूत्रार्थ - सार्वधातुक कित् ङित् परे होने पर उप्रत्ययान्त क्रञ् के ह्रस्व अकार के स्थान पर ह्रस्व उकार आदेश होता है।

सूत्रव्याख्या - इस विधिसूत्र में अतः (6/1), उत् (1/1) सार्वधातुके (7/1) ये तीन पद है। नित्यं करोतेः से करोतेः (5/1) पद की अनुवृत्ति होती है। उसका षष्ठ्येकवचनान्त से विपरिणाम है। गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि से क्ङिति की अनुवृत्ति होती है। उतृच प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् से प्रत्ययात् (5/1) उतः (1/1) पदों की अनुवृत्ति होती है। उनका षष्ठ्येकवचनान्त से विपरिणाम है। सूत्रार्थ होता है- सार्वधातुक कित् ङित् परे होने पर उप्रत्ययान्त क्रञ् के ह्रस्व अकार के स्थान पर ह्रस्व उकार आदेश होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय - पूर्वोक्त प्रकार से कर्+उ+तस् स्थिति में तस् सार्वधातुक होने से प्रकृत सूत्र से अ को उ होता है, सकार को रुत्व विसर्ग होकर **करुतः** रुप सिद्ध होता है।

बहुवचन में झि प्रत्यय को अन्तादेश में कृ उ अन्ति, ऋकार को गुण, उरण्परः से अर् होकर कर् उ अन्ति स्थिति में अकार को उकार होता है उकार को यण् वकार होकर कुर् व् अन्ति स्थिति में हलि च से उपधादीर्घ प्राप्त, आगे-

23.5 न भकुर्छुराम्॥ (8.3.79)

सूत्रार्थ - भसंज्ञक, कुर् व छुर् की उपधा के स्थान पर दीर्घ नहीं होता है।

सूत्रव्याख्या - इस विधिसूत्र में न अव्ययपद, भकुर्छुराम् (6/3) ये दो पद है। र्वोरुपधायाः दीर्घ इकः से उपधायाः (6/1), दीर्घः (1/1) पदों की अनुवृत्ति होती है। भं च कुर् च छुर् च भकुर्छुरः तेषां भकुर्छुराम् इति इतरेतरयोगद्वन्द्वः। भ एक संज्ञा है। जो यचि भम् से होती है। सूत्रार्थ होता है- भसंज्ञक, कुर् व छुर् की उपधा के स्थान पर दीर्घ नहीं होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय - पूर्वोक्त प्रकार से कुर्+व+अन्ति स्थिति में प्रकृत सूत्र दीर्घ नहीं होता है। मिलाने पर कुर्वन्ति बनता है।

वस्, मस् में लोपश्चास्यन्यतरयाम् म्वोः से उकार का विकल्प से लोप होता है। तब-

टिप्पणियाँ

23.6 नित्यं करोतेः॥ (6.4.108)

सूत्रार्थ - वकार, मकार पर हो तो कृ धातु के बाद उकारान्त प्रत्यय का नित्य लोप होता है।

सूत्रव्याख्या - इस विधिसूत्र में नित्यम् (2/1), करोतेः (5/1) ये दो पद हैं। नित्यम् क्रिया विशेषण है। उतृच प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् से प्रत्ययात् (5/1) उतः (1/1) पदों की अनुवृत्ति होती है। उनका षष्ठ्येकवचनान्त से विपरिणाम है। लोपश्चास्यन्यतरयाम् म्वोः से म्वोः (7/2) लोपः (1/1) पदों की अनुवृत्ति होती है। सूत्रार्थ होता है- वकार, मकार पर हो तो कृ धातु के बाद उकारान्त प्रत्यय का नित्य लोप होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय - पूर्वोक्त प्रकार से कुर्+उ+वस् स्थिति में प्रकृत सूत्र उकारान्त प्रत्यय का नित्य लोप, सकार को रुत्व विसर्ग होकर **कुर्वः** रुप सिद्ध होता है। इसी प्रकार **कुर्मः** बनता है।

विशेष- कृ धातु ञित् होने से स्वरितञितः कर्तृऽभिप्राये क्रियाफले से क्रियाफल का कर्तृगामी होने पर कृ धातु से विहित लकार के स्थान पर आत्मनेपद प्रयय होते हैं। क्रियाफल का परगामी होने से शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् से परस्मैपद प्रत्यय होते हैं।

आत्मनेपद स्थलों में सर्वत्र ङित्वत् भाव नहीं होने से उकार को गुण होता है। अत उत्सार्वधातुके से सर्वत्र अकार को उकार होता है।

इस प्रकार **लट् परस्मैपद में रूप**- करोति, कुरुतः, कुर्वन्ति। करोषि, कुरुथः, कुरुथ। करोमि, कुर्वः, कुर्मः। लट् आत्मनेपद में रूप- कुरुते, कुर्वाते, कुर्वते। कुरुषे, कुर्वाथे, कुरुध्वे। कुर्वे, कुर्वहे, कुर्महे।

लिट् प्रथमपुरूषैकवचन में तिप्, कृ मिप् में परस्मैपदानां णलतुसुस् थलथुसणल्वमाः से तिप् को णल् कृ अ, लिटिधातोरनभ्यासस्य से कृ को द्वित्वकार्य, पूर्वोऽभ्यासः से अभ्याससंज्ञा उरत् से कृ के ऋ को अर् हलादिः शेषः आदि हल् शेष, कुहोश्चुः से चुत्व, णल् णित् होने से अचो ञ्णिति से ऋ को वृद्धि आर् होकर चकार सिद्ध होता है। थल् में गुण होता है। मिप् में णलुत्तमो वा से विकल्प से वृद्धि तथा णित् अभाव में गुण होता है। अतुसादि में असंयोगाल्लिट् कित् से गुण निषेध होने से यण् होता है।

आत्मनेपद में रूप प्रक्रिया एध् धातु के समान होती है। यहां केवल प्रथमपुरूषैकवचन प्रदर्शित कर रहे हैं। प्रथमपुरूषैकवचन में तप्रत्यय को लिटस्तझयोरेशिरेच् से एशादेश, सार्वधातुकार्धधातुकयोः से ऋकार को गुण प्राप्त असंयोगाल्लिट् कित् से गुण निषेध, लिटिधातोरनभ्यासस्य से कृ को द्वित्वकार्य, पूर्वोऽभ्यासः से अभ्यास संज्ञा उरत् से कृ के ऋ को अर् हलादिः शेषः आदि हल् शेष, कुहोश्चुः से चुत्व, इको यणचि से ऋ को यण् रेफ होकर चक्रे सिद्ध होता है।

इस प्रकार **लिट् परस्मैपद में रूप**- चकार, चक्रतुः चक्रुः। चकर्थ, चक्रथुः, चक्र। चकार/चकर, चकृव, चकृम।

इस प्रकार **आत्मनेपद में रूप** - चक्रे चक्राते, चक्रिरे। चक्रषे, चक्राथे, चक्रद्वे। चक्रे, चकृवहे, चकृमहे।

लुट् में पूर्ववत् इट् निषेध। उ का अपवाद होकर स्यतासीलृलुटो: सूत्र से धातु से परे तासी प्रत्यय, सार्वधातुकार्धधातुकयो: से गुण होता है। इस प्रकार **लुट् परस्मैपद में**- कर्त्ता, कर्त्तारौ, कर्त्तार:। कर्त्तासि, कर्त्तास्थ:, कर्त्तास्थ। कर्त्तास्मि, कर्त्तास्व:, कर्त्तास्म:।

आत्मनेपद स्थल पूर्ववत् प्रक्रिया होती है। इसके लिए एध् धातु को देखें। इस प्रकार **लुट् आत्मनेपद में रूप**- कर्त्ता, कर्त्तारौ, कर्त्तार:। कर्त्तासे, कर्त्तासाथे, कर्त्ताध्वे। कर्त्ताहे, कर्त्तास्वहे, कर्त्तास्महे।

लृट् में प्राप्त उ का अपवाद होकर स्यतासीलृलुटो: सूत्र से धातु से परे स्य प्रत्यय आर्धधातुक संज्ञा, आर्धधातुकस्येड् वलादे: से इट् प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध होता है। उसके बाद ऋ)नो: स्ये से इट् आगम, स्य प्रत्यय आर्धधातुक संज्ञा होने से सार्वधातुकार्धधातुकयो: से गुण होता है। एवं षत्व होकर **करिष्यति** रूप बनता है। तप्रत्यय में पूर्ववत् प्रक्रिया में **करिष्यते** रूप बनता है। इस प्रकार **लुट् परस्मैपद में रूप**- करिष्यति, करिष्यत:, करिष्यन्ति। करिष्यसि, करिष्यथ:, करिष्यथ। करिष्यामि, करिष्याव:, करिष्याम:।

आत्मनेपद में रूप- करिष्यते, करिष्येते, करिष्यन्ते। करिष्यसे, करिष्येथे, करिष्यध्वे। करिष्ये, करिष्यावहे, करिष्यामहे।

लोट् उभयस्थल में कोई विशेष कार्य नहीं है। परस्मैपद में रूप- **करोतु,** (तातङ् से **कुरुतात्**) **कुरुताम् कुर्वन्तु। कुरु** (तातङ् से **कुरुतात्**) कुरुतम् कुरुत। करवाणि करवाव करवाम।

आत्मनेपद में रूप- कुरुताम्, कुर्वाताम्, कुर्वन्ताम्। कुरुष्व, कुर्वाथाम्, कुरुध्वम्। करवै, करवावहै, करवामहै।

लङ् में उभयस्थल में कोई विशेष कार्य नहीं है। इस प्रकार लङ् परस्मैपद में रूप- अकुरोत्, अकुरुताम्, अकुर्वन्। अकुरो:, अकुरुतम्, अकुरुत। अकरवम्, अकुर्व अकुर्म।

लङ् आत्मनेपद में रूप- अकुरुत, अकुर्वाताम्, अकुर्वत। अकुरुथा:, अकुर्वाथाम्, अकुरुध्वम्। अकुर्वि, अकुर्वहि, अकुर्महि।

विधिलिङ् में तिप्, उ प्रत्यय, इकार लोप, यासुट् एवं सुट् का आगम, गुणरपर तथा दोनों सकारों का लोप होकर कुर् उ या त् स्थिति में -

23.7 ये च॥ (6.4.109)

सूत्रार्थ - यकारादि प्रत्यय परे हाने पर कृ धातु के बाद उकारान्त प्रत्यय का लोप होता है।

सूत्रव्याख्या - इस विधि सूत्र में ये (7/1), च अव्ययपद ये दो पद हैं। यकार में अकार उच्चारणार्थ है। नित्यं करोते: से करोते: (5/1) की अनुवृत्ति होती है। उतृच प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् से प्रत्ययात् (5/1) उत: (1/1) पदों की अनुवृत्ति होती है। उनका षष्ठ्येकवचनान्त से विपरिणाम है।

टिप्पणियाँ

लोपश्चास्यन्यतरयाम् म्वोः से म्वोः (7/2) लोपः (1/1) पदों की अनुवृत्ति होती है। अंगस्य का अधिकार है। सूत्रार्थ होता है - यकारादि प्रत्यय परे हाने पर कृ धातु के बाद उकारान्त प्रत्यय का लोप होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय - पूर्वोक्त प्रकार से कुर् उ या त् स्थिति में प्रकृत सूत्र से उ का लोप होकर **कुर्यात्** सिद्ध होता है। अन्य रूप स्वयं समझें। आशीर्लिङ् आत्मनेपद में रूप - कुर्यात्, कुर्यातम्, कुर्युः। कुर्याः, कुर्यातम्, कुर्यात। कुर्याम्, कुर्याव, कुर्याम।

आत्मनेपद में रूप- कुर्वीत्, कुर्वीयाताम्, कुर्वीरन्। कुर्वीथाः, कुर्वीयाथाम्, कुर्वीध्वम्। कुर्वीय, कुर्वीवहि, कुर्वीमहि।

आशीर्लिङ् में तिप् में इकार लोप, यासुट् एवं सुट् का आगम तथा सकार का लोप, यात् आर्धधातुक तिङ् है। अतः रिङ्श्यग्लिङक्षु से कृ के ऋ को रिङ् आदेश होकर क्रियात् बनता है। आशीर्लिङ् परस्मैपद में रूप - क्रियात्, क्रियास्ताम्, क्रियासुः। क्रियाः, क्रियास्तम्, क्रियास्त। क्रियासम्, क्रियास्व, क्रियास्म।

आत्मनेपद स्थल में उश्च से झलादिलिङ् कित् है। अतः ऋकार को गुण नहीं होता। प्रथमपुरूषैकवचन तप्रत्यय, सीयुट् सुट्, स्थिति में कृ सीय् स् त। समुदाय तिङ् है, लिङाशिषि से आर्धधातुक संज्ञा है। आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध होता है। लोपो व्योर्वलि से यकार लोप। आदेश प्रत्यययोः से षत्व एवं ष्टुत्व होकर क्रषीष्ट बनता है।

आशीर्लिङ् आत्मनेपद में रूप - क्रषीष्ट, क्रषीयास्ताम्, क्रषीरन्। क्रषीष्ठाः क्रषीयास्थाम्, क्रषीढ्वम्। क्रषीय, क्रषीवहि, क्रषीमहि।

लुङ् परस्मैपद में स्थल में कृ से अट्, तिप् प्रत्यय, इकार लोप, उ प्रत्यय के अपवाद में च्लि को सिच्, आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध होता है। अस्तिसिचोऽपृक्ते से ईट् आगम, सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु से कृ के ऋकार को वृद्धि आर् एवं सकार लोप होकर अकार्षीत् होता है। इस प्रकार लुङ् परस्मैपद में रूप - अकार्षीत्, अकार्ष्टाम्, अकार्षुः। अकार्षीः, अकार्ष्टम् अकार्ष्ट। अकार्षम्, अकार्ष्व, अकार्ष्म।

आत्मनेपद प्रथमपुरूषैकवचन में तप्रत्यय, कृ से अट्, उप्रत्यय के अपवाद में च्लि को सिच्, अ कृ स् त स्थिति में तनादिभ्यस्तथासोः से विकल्प से सकार लोप होकर अक्रत तथा लोपाभाव में ह्रस्वादंगात् से झल् परे सिच् सकार का लोप होकर अक्रत समान रूप बनता है। जहां झल् परे नहीं सकार लोप नहीं अक्रषाताम्, अक्रषाथाम् बनता है।

आत्मनेपद में रूप - अक्रत, अक्रषाताम्, अक्रषत। अक्रथाः, अक्रषाथाम्, अक्रढ्वम्। अक्रषि, अक्रष्वहि, अक्रष्महि।

लृङ् उभयस्थल में स्य को आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध होने पर भी उाके बाद ऋ) नोः स्ये से इट् आगम, स्य प्रत्यय आर्धधातुक संज्ञा होने से सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण होता है। कोई विशेष कार्य नहीं है। इस प्रकार लङ् परस्मैपद

में रूप- अकरिष्यत्, अकरिष्यताम्, अकरिष्यन्। अकरिष्यः, अकरिष्यतम् अकरिष्यत। अकरिष्यम्, अकरिष्याव, अकरिष्याम।

आत्मनेपद में रूप- अकरिष्यत, अकरिष्येताम्, अकरिष्यन्त। अकरिष्यथाः, अकरिष्येथाम् अकरिष्यध्वम्। अकरिष्ये, अकरिष्यावहि, अकरिष्यामहि।

पाठगत प्रश्न 23.1

1. तनादिगणीय धातुओं से कौन सा विकरण प्रत्यय होता है?
2. कृ धातु से कौन सा विकरण प्रत्यय होता है?
3. तनादिभ्यस्तथासोः का अर्थ क्या है?
4. ये च का अर्थ क्या है?
5. नित्यं करोतेः का अर्थ क्या है?
6. अनुदात्तोपदेशादि सूत्र को पूरा कीजिए?
7. तन् धातु आत्मनेपद लट् उत्तमपुरुष द्विवचन में रूप होता है?
8. कृ धातु परस्मैपद आशीर्लिङ् प्रथमपुरुष एकवचन में रूप होता है?
9. करिष्यति में इट् आगम किससे होता है?
10. तन् धातु आत्मनेपद लङ् प्रथमपुरुषैकवचन में कितने रूप होते है?

क्रयादिगणः

क्री (डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये) उभयपदी, अनुदात्तेत, अनिट्, सकर्मक क्रयादिगणीय धातु से वर्तमान क्रियावृत्तित्व की विवक्षा में कर्ता अर्थ में लट् परस्मैपद में तिप् प्रत्यय होकर तुद्+ति स्थिति में शप् प्राप्ति में यह सूत्र आरम्भ होता है।

23.8 क्रयादिभ्यः श्ना॥ (3.1.81)

सूत्रार्थ - कर्तृवाच्य सार्वधातुक परे होने पर क्रयादिगण की धातु से परे श्ना प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या - इस विधिसूत्र में क्रयादिभ्यः (5/3), श्ना (1/1) ये दो पद है। कर्तरिशप् को कर्तरि (7/1), सार्वधातुकेयक् से सार्वधातुके (7/1) पदों की अनुवृत्ति होती है। प्रत्ययः (1/1) परश्च (1/1) का अधिकार है। धातोरेवाचो हलादेः क्रियासमभिव्याहारे यङ् सूत्र से धातोः पद अनुवृत्त होता है। दश धातुगणों में तुदादिगण नौवा गण है। क्री आदिः येषाम् (धातुनाम्) ते क्रयादयः

टिप्पणियाँ

(धातवः) इति तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहिसमासः, तेभ्यः क्रयादिभ्यः। सूत्रार्थ होता है- कर्ता अर्थ में सार्वधातुक संज्ञक प्रत्यय परे क्रयादिगणीय धातुओं से श्ना प्रत्यय होता है। श प्रत्यय के शकार इत्संज्ञक लशक्वतद्धिते से है। ना शेष रहता है। अपित् होने से ङित्वत् भाव है। यह कर्तरिशप् का अपवाद है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्वोक्त प्रकार से क्री+ति स्थिति में प्राप्त शप् का बाध करके प्रकृत सूत्र से श्ना प्रत्यय होता है क्योंकि यहां ति कर्ता अर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे है। क्री+ना+ति स्थिति में तिङ्शित् सार्वधातुकम् से सार्वधातुक संज्ञा में सार्वधातुकार्धधातुकयोः से सु के उकार गुण प्राप्त तब श्ना प्रत्यय अपित् सार्वधातुक होने से क्ङिति च से गुण निषेध। उसके बाद नकार को अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि से णकार होकर **क्रीणाति** रुप सिद्ध होता है।

तस् में क्री+ना+तस् स्थिति में -

23.9 ई हल्यघोः॥ (6.4.113)

सूत्रार्थ - हलादि कित् ङित् सार्वधातुक परे होने पर श्ना और अभ्यस्त अंग के अकार के स्थान पर ईकार होता है किन्तु घु संज्ञक धातुओं के आकार के स्थान पर ईकार नहीं होता।

सूत्र व्याख्या - इस विधिसूत्र में ई (लुप्त प्रथमैकवचनान्त पद) हलि (7/1), अघोः (6/1) ये तीन पद है। श्नाभ्यस्तयोरातः से श्नाभ्यस्तयोः (6/2), आतः (6/1) पदों की अनुवृत्ति होती है। अत उत्सार्वधातुके से सार्वधातुके (7/1) पद की अनुवृत्ति होती है। गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि से क्ङिति की अनुवृत्ति होती है। सूत्रार्थ होता है- हलादि कित् ङित् सार्वधातुक परे होने पर श्ना और अभ्यस्त अंग के अकार के स्थान पर ईकार होता है किन्तु घु संज्ञक धातुओं के आकार के स्थान पर ईकार नहीं होता।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्वोक्त प्रकार से क्री+ना+तस् स्थिति में प्राप्त शप् का बाध करके प्रकृत सूत्र से श्ना प्रत्यय होता है क्योंकि यहां ति कर्ता अर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे है। क्री+ना+ति स्थिति में तिङ्शित् सार्वधातुकम् से सार्वधातुक संज्ञा में सार्वधातुकार्धधातुकयोः से सु के उकार गुण प्राप्त तब श्ना प्रत्यय अपित् सार्वधातुक होने से क्ङिति च से गुण निषेध। उसके बाद प्रकृत सूत्र से ना को ईकार तथा नकार को अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि से णकार एवं सकार को विसर्ग होकर **क्रीणीतः** रुप सिद्ध होता है।

बहुवचन में झि को अन्तादेश से क्री+ना+अन्ति स्थिति में -

23.10 श्नाभ्यस्तयोरातः॥ (6.4.112)

सूत्रार्थ - सार्वधातुक कित् ङित् परे हो तो श्ना और अभ्यस्त अंग के आकार का लोप हो।

सूत्र व्याख्या - इस विधिसूत्र में श्नाभ्यस्तयोः (6/2), आतः (6/1) ये दो पद है। श्नसोरल्लोपः से लोपः (1/1) पद की अनुवृत्ति होती है। अत उत्सार्वधातुके से सार्वधातुके (7/1) पद की अनुवृत्ति

होती है। गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि से क्ङिति की अनुवृत्ति होती है। सूत्रार्थ होता है- सार्वधातुक कित् ङित् परे हो तो श्ना और अभ्यस्त अंग के आकार का लोप होता है।

विशेष- यहां श्नाभ्यस्तयोरातः उत्सर्ग सूत्र है। ई हल्यघोः का अपवाद है। श्नाभ्यस्तयोरातः सामान्यतया अजादि व हलादि कित् व ङित् सार्वधातुक परे अर्थ प्राप्त होता है। किन्तु हलादि कित् व ङित् सार्वधातुक परे हो तो ई हल्यघोः प्रवृत होता है। अतः ई हल्यघोः का अपवाद है। उससे हलादि कित् व ङित् सार्वधातुक परे हो तो श्नाभ्यस्तयोरातः प्रवृत नहीं होता है। अतः अजादि कित् व ङित् सार्वधातुक परे हो तो श्नाभ्यस्तयोरातः प्रवृत होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्वोक्त प्रकार से क्री+ना+ अन्ति स्थिति में अजादि कित् सार्वधातुक परे है। प्रकृत सूत्र से श्ना प्रत्यय आकार का लोप एवं नकार को णकार होकर **क्रीणन्ति** रूपसिद्ध होता है। इसी प्रकार आगे हलादि ङित् सार्वधातुक परे हो तो ईत्व, अजादि ङित् सार्वधातुक परे हो तो आकार लोप करना चाहिए।

विशेष- क्री धातु ञित होने से स्वरितञितः कर्तृऽभिप्राये क्रियाफले से क्रियाफल का कर्तृगामी होने पर तुद् धातु से विहित लकार के स्थान पर आत्मनेपद प्रत्यय होते हैं। क्रियाफल का परगामी होने से शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् से परस्मैपद प्रत्यय होते हैं।

इस प्रकार **लट् परस्मैपद में रूप**- क्रीणाति, क्रीणीतः क्रीणन्ति। क्रीणासि क्रीणीथः क्रीणीथ। क्रीणामि क्रीणीवः क्रीणीमः।

लट् आत्मनेपद में रूप- क्रीणीते, क्रीणाते, क्रीणते। क्रीणीषे, क्रीणाथे, क्रीणीध्वे। क्रीणे, क्रीणीवहे, क्रीणीमहे।

लिट् प्रथमपुरूषैकवचन में तिप्, कृ तिप् में परस्मैपदानां णलतुसुस् थलथुसणल्वमाः से तिप् को णल् क्री अ, लिटिधातोरनभ्यासस्य से क्री को द्वित्वकार्य, पूर्वोऽभ्यासः से अभ्याससंज्ञा, हलादिः शेषः आदि हल् शेष, की क्री अ। उसके बाद ह्रस्वः सूत्र से अभ्यास के ईकार को इकार, कुहोश्चुः से चुत्व, णल् णित् होने से अचो ञ्णिति से ई को वृद्धि ऐ होकर चिकै अ अयादेश होकर **चिक्राय** सिद्ध होता है। अतुसादि में असंयोगाल्लिट् कित् से गुण निषेध होने से यण् होता है। अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ सूत्र से इकार के स्थान पर इयङ् आदेश होकर चिक् र् इय् अतुस् होता है। मिप् में णलुत्तमो वा से विकल्प से वृद्धि तथा णित् अभाव में गुण होता है। सकार को विसर्ग होकर **चिक्रियतुः** रूप होता है।

थल् में आर्धधातुकस्येड्वलादेः से इड् आगम प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् सूत्र से उसका निषेध प्राप्त उसको भी बाध करके क्रादि नियमानुसार नित्य इट् प्राप्त उसका भी अचस्तास्वत्थल्य लिटो नित्यम् से निषेध प्राप्त है। तब उसका बाध करके भारद्वाज नियम से वैकल्पिक इट् आगम होता है। दो रूप सिद्ध होते हैं। वस् और मस् क्रादि नियमानुसार नित्य इट् आगम। विभाषेटः से ध्वम् के ध को वैकल्पिक ढत्व होता है।

इस प्रकार **लिट् परस्मैपद में रूप**- चिक्राय, चिक्रियतुः, चिक्रियुः। चिक्रियिथ/ चिक्रेथ, चिक्रियथुः, चिक्रिय। चिक्रिय/ चिक्राय, चिक्रियिव, चिक्रियिम।

टिप्पणियाँ

इस प्रकार **आत्मनेपद में रूप** - चिक्रिये, चिक्रियाते, चिक्रियिरे। चिक्रियिषे, चिक्रियाथे, चिक्रियिढ्वे/ चिक्रियिध्वे। चिक्रिये, चिक्रियिवहे, चिक्रियिमहे।

लुट् में श्ना का अपवाद होकर स्यतासीलृलुटोः सूत्र से धातु से परे तास् प्रत्यय, आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध होता है। शेष प्रक्रिया भू धातुवत् होती है। इस प्रकार **लुट् परस्मैपद में**- क्रेता, क्रेतारौ, क्रेतारः। क्रेतासि, क्रेतास्थः, क्रेतास्थ। क्रेतास्मि, क्रेतास्वः, क्रेतास्मः।

आत्मनेपद स्थल पूर्ववत् प्रक्रिया होती है। इसके लिए एध् धातु को देखें। इस प्रकार **लुट् आत्मनेपद में रूप**- क्रेता, क्रेतारौ, क्रेतारः। क्रेतासे, क्रेतासाथे, क्रेताध्वे। क्रेताहे, क्रेतास्वहे, क्रेतास्महे।

लृट् प्रथमपुरूषैकवचन में प्राप्त श्ना का अपवाद होकर स्यतासीलृलुटोः सूत्र से धातु से परे स्य प्रत्यय आर्धधातुक संज्ञा, सार्वधातुकार्धधातुकयोः से क्री के ई को गुण होता है। आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध होता है। सकार को षत्व। शेष प्रक्रिया भू धातुवत् होती है। इस प्रकार **लुट् परस्मैपद में**- क्रेष्यति, क्रेष्यतः, क्रेष्यन्ति। क्रेष्यसि, क्रेष्यथः, क्रेष्यथ। क्रेष्यामि, क्रेष्यावः, क्रेष्यामः।

आत्मनेपद स्थलों में थास् को छोड़कर आथाम् आदि में टित आत्मनेपदानाम् टेरे सूत्र से टि को एत्व होता है। **आत्मनेपद में रूप**- क्रेष्यते, क्रेष्येते, क्रेष्यन्ते। क्रेष्यसे, क्रेष्येथे, क्रेष्यध्वे। क्रेष्ये, क्रेष्यावहे, क्रेष्यामहे।

लोट् उभयस्थल में कोई विशेष कार्य नहीं है। परस्मैपद में रूप- क्रीणातु, (तातङ् से क्रीणीतात्) क्रीणीताम्, क्रीणन्तु। क्रीणीहि (तातङ् से क्रीणीतात्) क्रीणीतम्, क्रीणीत। क्रीणानि, क्रीणाव, क्रीणाम।

आत्मनेपद में रूप- क्रीणीताम्, क्रीणाताम्, क्रीणताम्। क्रीणीष्व, क्रीणाथाम्, क्रीणीध्वम्। क्रीणै, क्रीणावहै, क्रीणामहै।

इस प्रकार **लङ् परस्मैपद में रूप**- अक्रीणात्, अक्रीणीताम्, अक्रीणन्। अक्रीणाः, अक्रीणीतम्, अक्रीणीत। अक्रीणाम्, अक्रीणीव, अक्रीणीम।

लङ् आत्मनेपद में रूप- अक्रीणीत, अक्रीणाताम्, अक्रीणत। अक्रीणीथाः, अक्रीणाथाम्, अक्रीणीध्वम्। अक्रीणि, अक्रीणीवहि, अक्रीणीमहि।

विधिलिङ् परस्मैपद में रूप- क्रीणीयात्, क्रीणीयाताम्, क्रीणीयुः। क्रीणीयाः, क्रीणीयातम्, क्रीणीयात। क्रीणीयाम्, क्रीणीयाव, क्रीणीयाम।

विधिलिङ् आत्मनेपद में रूप- क्रीणीत, क्रीणीयाताम्, क्रीणीरन्। क्रीणीथाः, क्रीणीयाथाम्, क्रीणीध्वम्। क्रीणीय, क्रीणीवहि, क्रीणीमहि।

आशीर्लिङ् परस्मैपद में रूप - क्रीयात्, क्रीयास्ताम्, क्रीयासुः। क्रीयाः, क्रीयास्तम्, क्रीयास्त। क्रीयासम्, क्रीयास्व, क्रीयास्म।

आशीर्लिङ् आत्मनेपद में रूप - क्रेषीष्ट, क्रेषीयास्ताम्, क्रेषीरन्। क्रेषीष्ठाः, क्रेषीयास्थाम्, क्रेषीढ्वम्। क्रेषीय, क्रेषीवहि, क्रेषीमहि।

लुङ् परस्मैपद में स्थल में क्री से अट्, तिप् प्रत्यय, इकार लोप, श्नाप्रत्यय के अपवाद में च्लि को सिच्, अस्तिसिचोऽपुक्ते से ईट् आगम, सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु से क्री के ई को वृद्धि ऐत्व, सकार को षत्व होकर अक्रैषीत् रूप होता है।

लुङ् परस्मैपद में रूप- अक्रैषीत्, अक्रैष्टाम्, अक्रैषुः। अक्रैषीः, अक्रैष्टम्, अक्रैष्टम्, अक्रैष्ट। अक्रैषम्, अक्रैष्व, अक्रैष्म।

आत्मनेपद में रूप- अक्रेष्ट, अक्रेषताम्, अक्रेषत। अक्रेष्ठाः, अक्रेषाथाम् अक्रेढ्वम्। अक्रेषि, अक्रेष्वहि, अक्रेष्महि।

लृङ् में अट्, तिप्, इकार लोप, श्ना के स्थान पर स्य, आर्धधातुक संज्ञास्य प्रत्यय आर्धधातुक संज्ञा, सार्वधातुकार्धधातुकयोः से क्री के ई को गुण होता है। आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध होता है। सकार को षत्व। शेष प्रक्रिया भू धातुवत् होती है।

लृङ् परस्मैपद में रूप - अक्रेष्यत्, अक्रेष्यताम्, अक्रेष्यन्। अक्रेष्यः, अक्रेष्यतम्, अक्रेष्यत। अक्रेष्यम्, अक्रेष्याव, अक्रेष्याम।

लृङ्: आत्मनेपद में पूर्ववत् प्रक्रिया में रूप - अक्रेष्यत, अक्रेष्येताम्, अक्रेष्यन्त। अक्रेष्यथाः, अक्रेष्येथाम्, अक्रेष्यध्वम्। अक्रेष्ये, अक्रेष्यावहि, अक्रेष्यामहि।

पाठगत प्रश्न 23.2

1. क्री धातु से कौन सा विकरण प्रत्यय होता है?
2. श्ना प्रत्यय विधायक सूत्र है?
3. क्री धातु लिट् मध्यमपुरुषबहुवचन परस्मैपद में कितने रूप होते हैं?
4. क्री धातु लिट् मध्यमपुरुषबहुवचन आत्मनेपद में रूप होता हैं?
5. क्रीणन्ति में आकार लोप किससे होता है?
6. क्री धातु का अर्थ क्या है?
7. क्री धातु उभयपदी है या नहीं?

चुरादिगणः

दश गणों में चुरादिगण अन्तिम है। यह अन्य गणों से विलक्षण है। णिच् दो प्रकार का होता है। 1 स्वार्थिक 2 हेतुमान। धातु के लकार विधान से पूर्व जब स्वार्थ में णिच् होता है तब उसकी

सनाद्यन्ता धातवः से धातु संज्ञा में लकार शप् इत्यादि होते हैं। प्रकृति ही अर्थ की परिपोषक होती है। इस हेतु से यह णिच् स्वार्थिक कहा जाता है।-अनिर्दिष्टार्थाः प्रत्ययाःस्वार्थे भवन्ति। जब हेत्वर्थ में णिच् होता है।तब वह हेतुमान णिच् कहा जाता है।

चुर स्तेये धातु से स्वार्थ में णिच् विधान के लिए समत्र प्रस्तुत है-

23.11 सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच्॥ (3.1.25)

सूत्रार्थ - सत्याप, पाश, रूप, वीणा, तूल, श्लोक, सेना, लोम, त्वच, वर्म, वर्ण, चूर्ण और चुर् आदि धातुओं के बाद णिच् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या - इस विधिसूत्र में सत्याप पाशरूपवीणा तूलश्लोक सेनालोमत्वच वर्मवर्ण चूर्णचुरादिभ्यो (5/3), णिच् (1/1) ये दो पद है। चुर् आदिः येषाम् (धातुनाम्) ते चुरादयः (धातवः) इति बहुव्रीहिसमासः। सत्यापश्च पाशश्च रूपश्च वीणा च तूलं च श्लोकश्च सेना च लोम च त्वचश्च वर्म च वर्ण च चूर्ण च चुरादश्च तेषामितरेतरयोगद्वन्द्वे सत्यापपाशरूपवीणा तूलश्लोक सेनालोमत्वचवर्मवर्ण चूर्णचुरादिभ्यः इति बहुव्रीहिगर्भः द्वन्द्वसमासः। प्रत्ययः (1/1) परश्च (1/1) का अधिकार है। सूत्रार्थ होता है- सत्याप, पाश, रूप, वीणा, तूल, श्लोक, सेना, लोम, त्वच, वर्म, वर्ण, चूर्ण और चुर् आदि धातुओं के बाद णिच् प्रत्यय होता है। णिच् प्रत्यय के णकार की चुटू से व चकार की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा होती है। इ मात्र शेष रहता है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - चुर् धातु से लट् विधान से पूर्व प्रकृत सूत्र से स्वार्थ में णिच् होता है। णिच् की आर्धधातुकं शेषः आर्धधातुकसंज्ञा, पुगन्तलघूपधस्य च से लघूपधा चुर् के उ को ओ गुण होकर चोरि बनता है। उसके बाद चोरि की सनाद्यन्ता धातवः से धातु संज्ञा में लकार शप् इत्यादि होते हैं। तब शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् से परस्मैपद प्रत्यय होते हैं। किन्तु क्रियाफल का कर्तृगामी होने पर आत्मनेपद प्रत्यय होते हैं। उनकी सिद्धि के लिए अग्रिम सूत्र-

23.12 णिचश्च॥ (1.3.74)

सूत्रार्थ - यदि क्रिया का फल कर्तृगामी हो तो णिजन्त के बाद आत्मनेपद हो

सूत्र व्याख्या- इस विधि सूत्र में णिचः (5/1), च अव्ययपद ये दो पद हैं। अनुदात्तङित आत्मनेपदम् से आत्मनेपदम् (1/1), स्वरितञितः कर्तृऽभिप्राये क्रियाफले से कर्तृऽभिप्राये (7/1), क्रियाफले (7/1) पदों की अनुवृत्ति होती है। णिच् एक प्रत्यय है। उससे प्रत्ययग्रहणे तदन्ता ग्राह्याः से तदन्त विधि से णिजन्त धातु से यह अर्थ प्राप्त होता है। सूत्रार्थ होता है- यदि क्रिया का फल कर्तृगामी हो तो णिजन्त के बाद आत्मनेपद प्रत्यय होता है। इस प्रकार चुरादि धातु से परे क्रिया का फल कर्तृगामी होने पर आत्मनेपद प्रत्यय और क्रियाफल का परगामी होने पर परस्मैपद प्रत्यय होते हैं।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्वोक्त प्रकार से चोरि ल् स्थिति में कर्तृगामी होने पर प्रकृत सूत्र से लकार के स्थान पर आत्मनेपद प्रत्यय। लट् प्रथमपुरूषैकवचन तप्रत्यय में चोरि त। त प्रत्यय

की तिङ् शित् सार्वधातुकम् से सार्वधातुक संज्ञा होकर कर्तरि शप् से कर्ता अर्थ में शप् का आगम तथा अनुबन्ध लोप चोरि अ त, सार्वधातुकार्धधातुकयोः से इ को गुण होता है। टित आत्मनेपदानां टेरे सूत्र से त् के 'अ' टि संज्ञक को ए तथा अयादि होकर **चोरयते** रूप सिद्ध होता है।

क्रियाफल का परगामी होने से शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् से परस्मैपद प्रत्यय होते हैं। लट् प्रथमपुरूषैकवचन तिप्प्रत्यय में चोरि ति। त प्रत्यय की तिङ् शित् सार्वधातुकम् से सार्वधातुक संज्ञा होकर कर्तरि शप् से कर्ता अर्थ में शप् का आगम तथा अनुबन्ध लोप चोरि अ ति, सार्वधातुकार्धधातुकयोः से इ को गुण तथा अयादि होकर **चोरयति** रूप सिद्ध होता है।

चुर् धातु से लिट् आर्धधातुक विधान में स्वार्थ में सत्यापपाशरूपवीणा तूलश्लोकसेनालोमत्व चवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच् से णिच् होता है। णिच् की आर्धधातुकं शेषः आर्धधातुकसंज्ञा, पुगन्तलघूपधस्य च से लघूपधा चुर् के उ को ओ गुण होकर चोरि बनता है। उसके बाद चोरि की सनाद्यन्ता धातवः से धातु संज्ञा होती है। अनद्यतन परोक्षभूतार्थ क्रियावृत्ति का परोक्षे लिट् से लिट् लकार होकर चोरि+लिट् स्थिति में चोरि धातु अनेकाच् होने से कास्यनेकाच आम्वक्तव्यो लिटि वार्तिक से आम् प्रत्यय चोरि आम् ल्। अयामन्ताल्वाय्येत्न्विष्णुषु से चोरि के इकार को अय् आदेश चोर् अय् आम् ल्। उसके बाद आमः सूत्र से लिट् का लोप। लिट् कृदतिङ् सूत्र से कृतसंज्ञक है चोरयाम् से लिट् का लोप में प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् सूत्र से प्रत्ययलक्षण करके चोरयाम् कृदन्त है। उसकी कृत्तद्धितसमासाश्च सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होती है। स्वौजसौट ... सूत्र से सु सुबन्त में चोरयाम्+सु स्थिति में आमः सूत्र से सु का लोप होकर चोरयाम् शेष रहता है। इसका पुनः प्रत्ययलक्षण करके सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् से पद संज्ञा होती है। चोरयाम् इस आमन्तत्व से कृञचानुप्रयुज्यते लिटि सूत्र से लिट् परक को कृ, भू, अस् धातुओं प्रयोग होता है। सर्वप्रथम कृ धातु का प्रयोग प्रस्तुत है। प्रथमपुरूष एकवचन की विवक्षा में चोरयाम्+कृ+ति में स्थिति परस्मैपदानां णलतुसुस् थलथुसणल्वमाः से तिप् को णल् होकर चोरयाम्+कृ+अ। लिटिधातोरनभ्यासस्य से कृ को द्वित्वकार्य चोरयाम्+कृ+कृ+अ। पूर्वोऽभ्यासः से अभ्याससंज्ञा में उरत् से अभ्यासऋकार को अर् चोरयाम्+कर्+कृ+अ। हलादिः शेषः आदि हल् शेष चोरयाम्+क+कृ+अ। कुहोश्चुः से चुत्व, णल् णित् होने से अचो ञ्णिति से ऋ को वृद्धि आर् होकर चोरयाम्+क+कार्+अ। मोऽनुस्वारः से पदान्त मकार को अनुस्वार एवं वा पदान्तस्य सूत्र से अनुस्वार को विकल्प से परसवर्ण होकर **चोरयाञ्चकार** रूप सिद्ध होता है। तथा परसवर्ण के अभाव में **चोरयांचकार** रूप बनता है।

आम्प्रत्यय की प्रकृति ण्यन्त चोरि धातु उभयपदी है। इस लिए अनुप्रयुज्य कृ धातु भी उभयपदी होती है। अतः आत्मनेपद प्रथमपुरूष एकवचन की विवक्षा में **चोरयाञ्चक्रे** रूप सिद्ध होता है। पूर्ववत् प्रक्रिया से चोरयाम्+कृ+ल्। प्रथमपुरूष एकवचन की विवक्षा में तप्रत्यय चोरयाम्+कृ+त। स्थिति में लिटस्तझयोरेशिरेच् से त को एश्, अनुबन्ध लोप चोरयाम्+कृ+ए। लिटि धातोरनभ्यासस्य सूत्र से द्वित्व, अभ्यास कार्य में चोरयाम+च+कृ+ए तथा इकोयणचि से यण् होकर चोरयाम्+च+क्+र्+ए स्थिति में तथा मोऽनुस्वारः से पदान्त मकार को अनुस्वार एवं वा पदान्तस्य सूत्र से अनुस्वार को विकल्प से परसवर्ण होकर **चोरयाञ्चक्रे** रूप सिद्ध होता है। तथा परसवर्ण के अभाव में **चोरयांचक्रे** रूप बनता है।

टिप्पणियाँ

चुरादिगणीय सभी धातुओं से णिच् होता है। इसलिए वे णिजन्त होती हैं। कास्यनेकाच आम्वक्तव्यो लिटि वार्तिक से चुरादिगणीय सभी धातुओं से लिट् में आम् प्रत्यय होता है। तथा कृ भू अस् का अनुप्रयोग होता है।

लिट् में कृ का अनुप्रयोग-

चोरयांचकार, चोरयांचक्रतुः, चोरयांचक्रुः। चोरयांचकर्थ, चोरयांचक्रथुः, चोरयांचक्र। चोरयांचकार/ चोरयांचकर, चोरयांचक्रव, चोरयांचक्रम।

चोरयाञ्चकार, चोरयाञ्चक्रतुः, चोरयाञ्चक्रुः। चोरयाञ्चकर्थ, चोरयाञ्चक्रथुः, चोरयाञ्चक्र। चोरयाञ्चकार/ चोरयाञ्चकर, चोरयाञ्चकृव, चोरयाञ्चकृम।

चोरयांचक्रे, चोरयांचक्राते, चोरयांचक्रिरे। चोरयांचक्रषे, चोरयांचक्राथे, चोरयांचक्रढ्वे। चोरयांचक्रे, चोरयांचकृवहे, चोरयांचकृमहे।

चोरयाञ्चक्रे, चोरयाञ्चक्राते, चोरयाञ्चक्रिरे। चोरयाञ्चक्रषे, चोरयाञ्चक्राथे, चोरयाञ्चक्रढ्वे। चोरयाञ्चक्रे, चोरयाञ्चकृवहे, चोरयाञ्चकृमहे।

भू का अनुप्रयोग- चोरयाम्बभूव, चोरयाम्बभूवतुः, चोरयाम्बभूवुः। चोरयाम्बभूविथ, चोरयाम्बभूवथुः, चोरयाम्बभूव। चोरयाम्बभूव, चोरयाम्बभूविव, चोरयाम्बभूविम।

चोरयांबभूव, चोरयांबभूवतुः, चोरयांबभूवुः। चोरयांबभूविथ, चोरयांबभूवथुः, चोरयांबभूव। चोरयांबभूव, चोरयांबभूविव चोरयांबभूविम।

अस् का अनुप्रयोग- चोरयामास, चोरयामासतुः, चोरयामासुः। चोरयामासिथ, चोरयामासथुः, चोरयामास। चोरयामास चोरयामासिव चोरयामासिम। इस प्रक्रिया के लिए एध् के रूप देखे।

चुरादिगणीय धातुओं से णिजन्त विहित होने से अनेकाच् होकर सेट् है। इस लिए लुट् में तास् को इट् का आगम होता है। इस प्रकार लुट् परस्मैपद में- चोरयिता, चोरयितारौ, चोरयितारः। चोरयितासि, चोरयितास्थः, चोरयितास्थ। चोरयितास्मि, चोरयितास्वः, चोरयितास्मः।

आत्मनेपद स्थल पूर्ववत् प्रक्रिया होती है। इसके लिए एध् धातु को देखें। इस प्रकार लुट् आत्मनेपद में रूप- चोरयिता, चोरयितारौ, चोरयितारः। चोरयितासे, चोरयितासाथे, चोरयिताध्वे। चोरयिताहे, चोरयितास्वहे, चोरयितास्महे।

इसकी प्रक्रिया भू धातुवत् होती है। इस प्रकार लुट् परस्मैपद में- चोरयिष्यति, चोरयिष्यतः, चोरयिष्यन्ति। चोरयिष्यसि, चोरयिष्यथः, चोरयिष्यथ। चोरयिष्यामि, चोरयिष्यावः, चोरयिष्यामः।

आत्मनेपद स्थलों में थास् को छोड़कर आथाम् आदि में टित आत्मनेपदानाम् टेरे सूत्र से टि को एत्व होता है। आत्मनेपद में रूप- चोरयिष्यते, चोरयिष्येते, चोरयिष्यन्ते। चोरयिष्यसे, चोरयिष्येथे, चोरयिष्यध्वे। चोरयिष्ये, चोरयिष्यावहे, चोरयिष्यामहे।

लोट् उभयस्थल में कोई विशेष कार्य नहीं है। परस्मैपद में रूप- चोरयतु, (तातङ् से चोरयतात्) चोरयताम्, चोरयन्तु। चोरय (तातङ् से चोरयतात्), चोरयतम्, चोरयत। चोरयाणि, चोरयाव, चोरयाम।

आत्मनेपद में रूप- चोरयताम्, चोरयेताम्, चोरयन्ताम्। चोरयस्व, चोरयेथाम्, चोरयध्वम्। चोरये, चोरयावहै, चोरयाम है।

इस प्रकार लङ् परस्मैपद में रूप- अचोरयत्, अचोरयताम्, अचोरयन्। अचोरयः, अचोरयतम्, अचोरयत। अचोरयम्, अचोरयाव, अचोरयाम।

लङ् आत्मनेपद में रूप- अचोरयत, अचोरयेताम्, अचोरयत। अचोरयथाः, अचोरयेथाम्, अचोरयध्वम्। अचोरये, अचोरयावहि, अचोरयामहि।

विधिलिङ् परस्मैपद में रूप- चोरयत्, चोरयेताम्, चोरयेयुः। चोरयेः, चोरयेतम्, चोरयेत। चोरयेय्, चोरयेव, चोरयेम।

विधिलिङ् आत्मनेपद में रूप- चोरयेत, चोरयेयाताम्, चोरयेरन्। चोरयेथाः, चोरयेयाथाम्, चोरयेध्वम्। चोरये, चोरयेवहि, चोरयेमहि।

आशीर्लिङ् परस्मैपद में रूप - चोर्यात्, चोर्यास्ताम्, चोर्यासुः। चोर्याः, चोर्यास्तम्, चोर्यास्त। चोर्यासम्, चोर्यास्व, चोर्यास्म।

आशीर्लिङ् आत्मनेपद में रूप - चोरयिषीष्ट, चोरयिषीयास्ताम्, चोरयिषीरन्। चोरयिषीष्ठाः, चोरयिषीयास्थाम्, चोरयिषीढ्वम्। चोरयिषीय, चोरयिषीवहि, चोरयिषीमहि।

चुर् धातु से पूर्ववत् प्रक्रिया से चोरि लुङ् प्रथमपुरूषैकवचन में अट् तिप् इकार लोप, शप् के अपवाद में च्लि को सिच्, उसका बाधकर णिश्रिदुस्रुभ्यःकर्तरि चङ् से चङ् णेरनिटि से णि के इ का लोप णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः से उपधा ओकार को ह्रस्व उकार। उसके बाद चङि से द्वित्व होकर अ+चुर्+चुर्+अ+त्। अभ्यास संज्ञा में हलादिशेष अचुचुर्अत् यहां सन्वल्लघुनिचङ्परेऽनग्लोपे से चु को सन्वत् भाव में अभ्यास चु के उ को दीर्घो लघोः से दीर्घ ऊकार होकर **अचूचुरत्** रुप सिद्ध होता है। आत्मनेपद में तप्रत्यय में **अचूचुरत** रुप सिद्ध होता है।

(सूत्र- णिश्रिदुस्रुभ्यःकर्तरि चङ् 3.1.48-कर्तृ अर्थ लुङ् परेहोने पर ण्यन्त, श्रि, द्रु, स्रु धातुओं से परे च्लि को चङ् होता है।)

(सूत्र- णेरनिटि 6.4.51 - अनिट् आर्धधातुक परं हो तो णि का लोप होता है।)

(सूत्र- णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः 7.4.1 - चङ्परक णि परे हो तो उपधा को ह्रस्व होता है।)

(सूत्र- दीर्घो लघोः 7.4.94 - सन्वद्भाव के विषय में अभ्यास के लघु को दीर्घ होता है।)

(सूत्र- चङि 6.1.11- चङ् परे होने पर अभ्यास भिन्न धातु के प्रथम एकाच् को द्वित्व होता है।)

(सूत्र- सन्वल्लघुनिचङ्परेऽनग्लोपे 7.4.93- यदि अक् का लोप न हुआ हो तो चङ् परे होने पर लघु परे रहते सन् के समान कार्य होते है।)

लुङ् परस्मैपद में रूप - अचूचुरत्, अचूचुरताम्, अचूचुरन्। अचूचुरः, अचूचुरतम्, अचूचुरत। अचूचुरम्, अचूचुराव, अचूचुराम।

आत्मनेपद में रूप - अचूचुरत, अचूचुरेताम्, अचूचुरन्त। अचूचुरथाः, अचूचुरेथाम्, अचूचुरध्वम्। अचूचुरे, अचूचुरावहि, अचूचुरामहि।

लृङ् परस्मैपद में रूप - अचोरयिष्यत्, अचोरयिष्यताम्, अचोरयिष्यन्। अचोरयिष्यः, अचोरयिष्यतम्, अचोरयिष्यत। अचोरयिष्यम्, अचोरयिष्याव, अचोरयिष्याम।

लृङ्: आत्मनेपद में पूर्ववत् प्रक्रिया में रूप - अचोरयिष्यत, अचोरयिष्येताम्, अचोरयिष्यन्त। अचोरयिष्यथाः, अचोरयिष्येथाम्, अचोरयिष्यध्वम्। अचोरयिष्ये, अचोरयिष्यावहि, अचोरयिष्यामहि।

पाठगत प्रश्न 23.3

1. चुर् धातु से णिच् किस अर्थ में होता है?
2. चुर् धातु से स्वार्थ में णिच किस सूत्र से होता है?
3. चोरयति, चोरयते दोनों किस किस सूत्र से होते हैं?
4. चुर् धातु लिट् में कितने रूप होते हैं?
5. सत्यापदि सूत्र को पूरा कीजिए?
6. चोरयति में कौन सा विकरण होता हैं?

पाठ का सार

इस पाठ में तनादिगण, क्रयादिगण, चुरादिगण इन तीन गणों की समालोचना विहित है। उनमें से सर्वप्रथम तनादिगण की प्रथम धातु तन् के विषय में आलोचना की गई। वहाँ तन् धातु में तनादिकृभ्यः उ विकरण विधायक सूत्र की समालोचना की गई है। उसके बाद तनादिभ्यस्तथासोः, अनुदात्तोप देशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति, अत उत्सार्वधातुके, न भकुर्छुराम्, नित्यं करोतेः, ये च आदि सूत्रों की व्याख्या की गई है। उसके बाद तुद् धातु के विषय में समालोचना की गई है। क्री धातु से क्रयादिभ्यः श्ना से श्ना विकरण विधायक सूत्र की समालोचना की गई है। उसके बाद ई हल्यघोः श्नाभ्यस्तयोरातः सूत्रों की व्याख्या की गई है। अन्त में चुर् धातु की समालोचना

की गई है। वहां चुर् धातु से णिच् कैसे होता है। कौन सा विकरण होता है। इसकी समालोचना की गई है। इस पाठ में सभी रूपों की ससूत्र प्रक्रिया प्रदर्शित की गई है। उन्हें स्वयं सिद्ध करें। इस प्रकार भ्वादि से चुरादिगण तक दसगण है। इस प्रकरण में इनका नाम तिङन्त प्रकरण है।

पाठांत प्रश्न

1. सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच् सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
2. अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
3. तनादिभ्यस्तथासो सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
4. तन् धातु लट् परस्मैपद व आत्मनेपद में सविकल्प रूप लिखिए।
5. कृ धातु लट् परस्मैपद व आत्मनेपद में सविकल्प रूप लिखिए।
6. क्री धातु लट् परस्मैपद व आत्मनेपद में सविकल्प रूप लिखिए।
7. चुर् धातु लट् परस्मैपद व आत्मनेपद में सविकल्प रूप लिखिए।
8. चुर् धातु लिट् में कृ धातु के अनुप्रयोग में सविकल्प रूप लिखिए।
9. चुर् धातु लिट् में भू धातु के अनुप्रयोग में सविकल्प रूप लिखिए।
10. अचूचुरत् की प्रक्रिया लिखिए।
11. अक्रैषीत् की प्रक्रिया लिखिए।
12. अक्रत की प्रक्रिया लिखिए।
13. अक्रे चकार की प्रक्रिया लिखिए।
14. कुरुतः की प्रक्रिया लिखिए।
15. चोरयति, चोरयते की प्रक्रिया लिखिए।
16. चोरयाञ्चकार की प्रक्रिया लिखिए।
17. चोरयाञ्चक्रे की प्रक्रिया लिखिए।
18. क्री धातु लिट् परस्मैपद व आत्मनेपद में रूप लिखिए।

19. कृ धातु लिट् परस्मैपद व आत्मनेपद में रूप लिखिए।
20. अतानीत् अतनीत् की प्रक्रिया लिखिए।
21. अतत अतनिष्ट की प्रक्रिया लिखिए।
22. चिक्राय की प्रक्रिया लिखिए।
23. क्रर्वन्ति की प्रक्रिया लिखिए।
24. नित्यं करोतेः सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
25. ये च सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
26. ई हल्यघोः सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
27. श्नाभ्यस्तयोरातः सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
28. अत उत्सार्वधातुके सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

23.1

1. उ विकरण।
2. उ विकरण।
3. तनादिगण की धातुओं से परे सिच् का विकल्प से लुक् हो, त अथवा थास् परे हो तो।
4. यकारादि प्रत्यय परे हाने पर कृ धातु के बाद उकारान्त प्रत्यय का लोप होता है।
5. वकार, मकार पर हो तो कृ धातु के बाद उकारान्त प्रत्यय का नित्य लोप होता है।
6. अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति।
7. तन्वहे तनुवहे।
8. क्रियात्।
9. ऋद्धनोः स्ये।
10. टतत, अतनिष्ट दो रूप।

23.2

1. श्ना

2. क्यादिभ्यः श्ना।
3. चिक्रयिथ, चिक्रेथ।
4. चिक्रियिध्वे, चिक्रियिढ्वे।
5. श्नाभ्यस्तयोरातः।
6. द्रव्यविनिमय।
7. उभयपदी।

23.3

1. स्वार्थिक।
2. सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच्।
3. णिचश्च।
4. चोरयाञ्चकार, चोरयाम्बभूव, चोरयामास तीन रूप।
5. सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच्।
6. शप् विकरण।

टिप्पणियाँ

एतत्पुस्तकस्थसूत्राणां सूची
(अकारादिक्रमेण)

पाठे स्थानम्-सूत्र-अष्टाध्ययीक्रमः

[१९.१] अकृत्सार्वधातुकयोर्दीघः।। (७.४.२५)
[१७.९] अचस्तास्वत् थल्यनिटो नित्यम।। (७.२.६१)
[१७.५] अचो ञ्णिति।। (७.१.९१)
[१७.१] अत आदेः।। (७.४.७०)
[२३.४] अत उत्सार्वधातुके।। (६.४.११०)
[१७.२] अत उपधायाः।। (७.२.११६)
[१८.१] अत एकहल्मध्ये०।। (६.४.१२०)
[१३.८] अतो दीर्घो यञि।। (७.३.१०१)
[१६.४] अतो येयः।। (७.२.८०)
[१८.५] अतो लोपः।। (६.४.४८)
[१९.८] अतो हलादेर्लघोः।। (७.२.७)
[१५.९] अतो हेः।। (६.४.१०५)
[२१.६] अदः सर्वेषात्।। (३.४.१११)
[२१.१०] अदभ्यस्तात्।। (७.१४)
[२१.१] अदिप्रभृतिभ्यः शपः।। (२.४.७२)
[१५.१३] अनद्यतने लङ्।। (३.२.१११)
[१४.११] अनद्यतने लुट्।। (३.३.१५)
[१२.६] अनुदात्तङित आत्मनेपदम्।। (१.३.१२)
[२३.३] अनुदात्तोपदेशवनति०।। (६.४.३७)
[१४.९] अभ्यासे चर्च।। (८.४.५३)
[१७.६] असंयोगाल्लिट् कित्।। (१.२.५)
[१९.२] अस्तिसिचो[पृक्ते।। (७.३.९६)
[१२.१२] अस्मद्युत्तमः।। (१.४.१०६)
[१५.१६] आटश्च।। (६.१.९०)
[१५.१५] आडजादीनाम्।। (६.४.७२)
[१५.११] आडुत्तमस्य पिच्च।। (३.४.९२)
[१८.६] आमः।। (२.४.८१)
[२०.१०] आमेतः।। (३.४.९०)
[२०.५] आम्प्रत्ययवत् कृञो०।। (१.३.६३)
[१८.४] आयादय आर्धधातुके वा।। (३.१.३१)
[१३.२] आर्धधातुकं शेषः।। (३.४.११४)
[१२.१०] आर्धधातुकस्येड् वलादेः।। (७.२.३५)
[१५.३] आशिषि लिङ्-लोटौ।। (३.३.१७३]
[२०.४] इजादेर्द्वा गुरूमयतोऽनृच्छः।। (३.१.३६)
[१९.३] इट ईटि।। (८.२.२८)
[२०.१५] इटोऽत्।। (३.४.१०६)
[२१.४] इडत्यर्तिव्ययतीनाम्।। (७.२.६६)
[२०.७] इणः षीध्वंलुङ्लिटां०।। (८.३.७८)
[१५.१७] इतश्च।। (३.४.९९)
[१३.११] इदितो नुम् धातोः (७.१.५८)
[२३.९] ई हल्यघोः।। (६.४.११३)
[२२.४] उतश्च प्रत्ययाद०।। (६.४.१०६)
[१७.१०] उपदेशेऽत्वतः।। (७.२.६२)
[१८.८] उरत्।। (७.४.६६)
[१७.११] ऋतो भारद्वाजस्य।। (७.२.६३)
[१७.७] एकाच उपदेशेऽनुदात्तात्।। (७.२.१०)
[२०.१२] एत ते।। (३.४.९३)
[१५.४] एरुः।। (३.४.८६)
[१३.५] कर्तरि शप्।। (३.१.६८)
[१६.७] किताशिषि।। (३.४.१०४)
[१७.४] कुहोश्चुः।। (७.४.६२)
[१८.७] कृञ् चानुप्रयुज्यते लिटि।। (३.४.४०)

एतत्पुस्तकस्थसूत्राणां सूची (अकारादिक्रमेण)

[१८.११] आत औ णलः।। (७.१.३४)
[२०.२] आतो ङितः।। (७.२.८१)
[२०.१७] आत्मनेपदेष्वनतः।। (७.१.५)
[१८.१०] आदेच उपदेशेऽशिति।। (६.१.४५)
[१६.१२] गाति-स्था-घु-पा०।। (२.४.७७)
[१८.३] गुपूधूपविच्छिपणि।। (३.१.२८)
[१६.१०] च्लि लुङि।। (३.१.२३)
[१६.११] च्लेः सिच्।। (३.१.२२)
[२१.१२] जुसि च।। (७.३.८३)
[२१.८] जुहोत्यादिभ्यःश्लुः।। (२.४.७५)
[२२.९] झषस्तथोर्धोऽधः।। (७.२.४०)
[२०.१४] झस्य रन्।। (३.४.१०५)
[१६.६] झेर्जुस्।। (३.४.१०८)
[१३.७] झो[न्तः।। (७.१.३)
[२०.१] टित आत्मनेपदानां टेरे।। (३.४.७९)
[१७.१२] णलुत्तमो वा।। (७.१.९१)
[२३.१२] णिचश्च।। (१.३.७४)
[१३.१०] णो नः।। (६.१.६३)
[१२.५] तङानावात्मनेपदम्।। (१.४.९९)
[२३.१] तनादिकृञभ्य उः।। (३.१.७९)
[२३.२] तनादित्यस्तथासोः।। (२.४.७९)
[१५.७] तस्थस्थमिपां तान्तन्तामः।। (३.४.१०१)
[१२.१०] तान्येकवचनद्विवचन०।। (१.४.१०१)
[१४.१४] तासस्त्योर्लोपः।। (७.४.५०)
[१२.९] तिङस्त्रीणि त्रीणि०।। (१.४.१००)
[१३.१] तिङ् शित् सार्वधातुकम्।। (३.४.११३)
[१२.३] तिप्तस्झि-सिप्थस्थ०।। (३.४.७८)
[२२.६] तुदादिभ्यः शः।। (३.१.७७)
[१५.५] तुह्योस्तातङ्ङाऽ०।। (७.१.३५)
[१८.२] थलि च सेटि।। (६.४.१२१)
[२०.३] थासः से।। (३.४.८०)
[१७.८] कृसृभृवृस्तुद्रुस्त्रुश्रुवो०।। (७.२.१३)
[१६.८] क्ङिति च।। (१.१.५)
[२३.८] क्र्यादिभ्यःश्ना।। (३.१.८१)
[१८.१२] गमहनजनखनघसां०।। (६.४.९८)
[१४.२] परस्मैपदानां णल०।। (३.४.८२)
[१४.१] परोक्षे लिट् (३.२.११५)
[१३.१२] पुगन्तलघूपधस्य च।। (७.३.८६)
[१९.१०] पुषादिद्युताद्यलृदितः०।। (१.३.५५)
[१४.५] पूर्वो[भ्यासः।। (६.१.४)
[१४.८] भवतेरः।। (७.४.७३)
[२१.११] भीह्रीभृहुवांश्लुवच्च।। (३.१.३९)
[१४.३] भुवो वुग् लुङ्-लिटोः।। (६.४.८८)
[१६.१३] भूसुवोस्तिङि।। (७.३.८८)
[१६.१६] माङि लुङ्।। (३.३.१७५)
[१५.१०] मेर्निः।। (३.४.८९)
[१६.२] यासुट् परस्मैपदेषु०।। (३.४.१०३)
[१२.११] युष्मद्युपपदे समाना०।। (१.४.१०४)
[२३.७] ये च।। (६.४.१०९)
[१४.१५] रि च।। (७.४.५१)
[२२.८] रुधादिभ्यःश्नम्।। (३.१.७८)
[१२.१] लः कर्मणि च भावे०।। (३.४.६९)
[१२.४] लः परस्मैपदम्।। (१.४.९८)
[१६.३] लिङः स लोपोऽनन्त्यस्य।। (७.२.७९)
[२०.१३] लिङ सीयुट्।। (३.४.१०२)
[१३.४] लिङाशिषि।। (३.४.११६)
[१६.१८] लिङ्-निमित्ते लृङ्०।। (३.३.१३९)
[२२.७] लिङ्सिचावात्मनेपदेषु।। (१.२.११)
[२.६] लिटस्तझयोरेशिरेच्।। (३.४.८१)
[१४.४] लिटि धातोरनभ्यासस्य।। (६.१.८)
[१.१३] लिट् च।। (३.४.११५)
[२१.२] लिट्यन्यतरस्याम्।। (२.४.४०)

टिप्पणियाँ

टिप्पणियाँ

एतत्पुस्तकस्थसूत्राणां सूची (अकारादिक्रमेण)

[२२.११] दट्ठा।। (८.२.७५)

[२१.१३] दिवादिभ्यः श्यन्।। (३.१.६९)

[१७.३] द्विर्वचनेऽचि।। (१.१.५९)

[१३.९] धात्वादेः षः सः।। (६.१.६२)

[२०.८] धि च।। (८.२.२५)

[२३.५] न भकुर्छुराम्।। (८.२७९)

[१६.१५] न माङ्योगे।। (६.४.७४)

[२३.६] नित्यं करोतेः।। (६.४.१०८)

[१५.१२] नित्यं ङितः।। (३.४.९९)

[१९.७] नेटि।। (७.२.४)

[१२.२] वर्तमाने लट्।। (३.२.१२३)

[१६.१] विधिनिमन्त्रणा०।। (३.३.१६१)

[२१.३] शासिवसिघसीनां च।। (८.३.६०)

[१२.८] शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् (१.३.७८)

[१२.१३] शेषे प्रथमः।। (१.४.१०७)

[२२.१०]श्नसोरल्लोपः।। (६.४.१११)

[२३.१०]श्नाभ्यस्तयोरातः।। (६.४.११२)

[२१.९] श्लौ।। (६.१.१०)

[२३.११] सत्यापपाशरूपवीणा०।। (६.१.२५)

[२०.११] सवाभ्यां वामौ।। (३.४.९१)

[१६.१४] सार्वधातुकमपित्।। (१.२.४)

[१३.६] सार्वधातुकार्धधातुकयोः।। (७.३.८४)

[१९.५] सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु।। (७.२.१)

[१९.४] सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च।।(३.४.१०९)

[२०.१६] सुट् तिथोः।। (३.४.१०७)

[१५.१४] लुङ्-लङ्-लृङ्-क्ष्वडुदात्तः।। (६४.७१)

[१६.९] लुङ्।। (३.२.११०)

[२१.७] लुङ्सनोर्घसॢ।। (२.४.३७)

[१४.१३] लुटः प्रथमस्य डारौरसः।। (२.४.८५)

[१५.१] लृट् शेषे च।। (३.३.१३)

[१५.६] लोटो लङ्वत्।। (३.४.८५)

[१५.२] लोट् च।। (३.३.१६२)

[२२.३] लोपश्चास्यान्यतरस्यां।। (६.४.१०७)

[१६.५] लोपो व्योर्वलि।। (६.१.६४)

[१९.६] वदव्रजहलन्तस्याचः।। (७.२.३)

[१५.८] सेर्ह्यपिच्च।। (३.४.८७)

[२२.५] स्तुसुधूञभ्यः परस्मैपदेषु।। (७.२.७२)

[१६.१७] स्मोत्तरे लङ् च।। (३.३.१७६)

[१४.१२] स्यतासी लृलुटोः।। (३.१.३३)

[१८.९] स्वरतिसूतिसूयति०।। (७.२.४४)

[१२.७] स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले।। (१३.७२)

[२२.१] स्वादिभ्यःश्नुः।। (३.१.७३)

[२२.९] ह एति।। (७.४.५२)

[१४.६] हलादिः शेषः।। (७.४.६०)

[२१.१४] हलि च।। (८.२.७७)

[२१.५] हु-झल्भ्यो हेर्धिः।। (६.४.१०१)

[२२.२] हुनुवोः सार्वधातुके।। (६.४.८७)

[१९.९] हम्यन्त-क्षण्क्षसजागृ०।। (७.२.५)

[१४.७] ह्रस्वः।। (७.४.५९)